# जैन और बौद्ध का भेद

JAIN AND BAUDHS

TAKEN FROM THE

INTRODUCTION

TO THE

BHADRABAHU'S KALPASUTRA

BY

HERMANN JACOB

( LEIPZIG 1879. )

RAJA SIVA PRASAD C. S. I
FELLOW OF THE UNIVER-
SITIES OF CALCUTTA
AND ALLAHABAD.

राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद कृत

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा

फ़रवरी सन् १८९७ ई०

# जैन और बौद्ध का भेद

JAIN AND BAUDHS

TAKEN FROM THE

INTRODUCTION

TO THE

BHADRABAHU'S KALPASUTRA

BY

HERMANN JACOBI

( LEIPZIG 1879. )

BY

RAJA SIVA PRASAD C. S. I.
FELLOW OF THE UNIVERSITIES OF CALCUTTA
AND ALLAHABAD.

राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद कृत

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपा

फ़रवरी सन् १८९७ ई०

# जैन और बौद्ध का भेद ॥

अक्सर फ़रंगी विद्वान जैन और बौद्ध दोनों को आरम्भ ही से अलग२ न समझ कर एक को दूसरेसे निकला बतलाते हैं कोल्ब्रूक ने गौतम बुद्ध को वर्द्ध-मान महावीर का चेला समझा क्योंकि महावीर का एक चेला इन्द्रभूति था कि जिस को गोतम स्वामी और निरा गौतम के नाम से भी पुकारते हैं प्रिंसिप और टामस इन दोनों की भी यही राय है लेकिन बेवर कहताहै कि ऐसा नहीं होसक्ता क्योंकि इन्द्रभूति ब्राह्मण था और गौतम बुद्ध क्षत्री उसका गोत्र गौ-तम होने से वह बुद्ध नहीं होसक्ता अगर इन्द्रभूति वर्द्धमान महावीर का मत छोड़कर दूसरा मत अंगी-कार करता तो जैन सूत्र कभी उसको अच्छा न कह-ते उसकी पूरी बुराई लिखते क्योंकि सूत्र साफ़ कहते हैं कि महावीर के भानजे जमालिने मतमें पहला भेद डाला और महावीर के दूसरे चेले गोसाले मक्खलि पुत्र का भी ठट्ठा किया है यह ज़ाहिरा पाली सूत्र का मक्खलि गोसाला है कि जो बुद्ध के छः अनुमती आचार्य्यवादियों में से एक था ॥

विलसन जैनियों को बौद्धों की एक शाखा बत-लाता है और उस को दसवींसदी में यहां बौद्धों के

नाश होनेपर निकला समझता है वेबर जैन को इस से पुराना जानता है लेकिन बौद्धों को उस से भी आगे लासन वेबर का साथी है बिलसन के अनुसार यह कहा जासक्ताहै कि जैन सूत्र महावीर को केवल विहार का रहनेवालाही नहीं बतलाते कि जहां बुद्ध रहा और उपदेश दिया बल्कि बुद्धका सहकाली और उन्हीं राजाओं की सहाय में उसे लिखते हैं जो बुद्ध के सहकाली थे अगर्चि श्रेणिक और कूणिक या कोणिक वह नहीं हैं जिनका नाम अक्सर बौद्ध ग्रन्थोंमें पाया जाता है तौ भी श्रेण्य या श्रेणिक बिम्बिसार का विरुद मालूम होता है और उस के बेटे कूणिक का नाम औपपात्तिक सूत्र में बिम्बिसार पुत्र लिखा है हेमचन्द्र बम्भसार लिखता है यह बिम्बिसार का बेटा अजातशत्रु मालूम होता है क्योंकि जैन और बौद्ध दोनों उन दोनों को लिखते हैं कि अपने बाप को मारडाला था कूणिक का बेटा उदायिन जिसने जैनियों के मुताबिक़ पाटलिपुत्र बसाया था वही उदयि अजातशत्रु का बेटा है जिसको बौद्ध पाटलिपुत्र का बसानेवाला मानते हैं इस में किसी तरह का संदेह नहीं कि बुद्धके सहकाली बिम्बिसार और अजातशत्रु श्रेणिक और कूणिक के नाम से जैन अंगों में महावीर के सहकाली लिखे हैं इन से छोटों पर भी यह बात ठीक ठहरती है जैसे गोसाल मंखलिय

मक्खलि मंखलि या मक्खलि का बेटा बिम्बिसार या बिंभिसार और लिच्छवि या लेच्छई राजा विलसन के मुवाफ़िक़ यह दलील ठहरती है कि शाक्यसिंह और वर्द्धमान के लक़ब और नाम वही बुद्ध जिन और महावीर दोनों दर्जकरते हैं और स्त्री दोनों की यशोदा लिखी है लेकिन इसके सिवाय और कोई बात जो बुद्ध के लिये लिखीगई है वर्द्धमान के मुवाफ़िक़ नहीं पड़ती है मसलन् दोनों के रिश्तादारों के नाम और जन्मभूमि चेले उमर और उनके वाक़िआत और दोनों के चाल चलन जहांतक कि वे उन के उपदेश से मालूम होते हैं बिल्कुल जुदा २ हैं निदान महावीर और बुद्ध दो आदमी थे परन्तु एकही समय में और इसीलिये दोनों का मत एकसा मालूम होता है क्योंकि दोनों की जड़ एक थी और दोनों ब्राह्मणों के बख़िलाफ़ कि जैसी उस समय के लोगों की तबीअत ही होगई थी क्योंकि सामन्नफलसूत्र में छओं वादियों का हाल पढ़ने से जो बुद्ध के समयमें थे ज़ाहिर होता है कि सब नये नये मत निकालना चाहते थे बुद्ध बढ़गया तो क्या अचरज है कि महावीर का मत भी जड़ पकड़ गया अब हमको उनकी भी सुननी चाहिये जो बौद्ध को जैन से पहले मानते हैं वह कहते हैं कि जैनियों में जातिभेद है अर्थात् ब्राह्मण जब बौद्धों को निकालने लगे बौद्ध जाति भेद

मानकर जैनी होगये पर यह वाहियात है जैनियों में दोही भेद हैं साधु (यति) और श्रावक और अगर वह जातिभेद मानते हैं तो लंका के बौद्ध भी मानते हैं इस्से मत से कुछ इलाक़ा नहीं यह तो आपस का व्यौहार है यहबात भी कि बौद्धों की पाली भाषा जैनियों की प्राकृत से पुरानी है लिहाज़ के लाइक़ नहीं क्योंकि जैनियों के सूत्र जैसे अब हैं महावीर के निर्वाण से प्रायः एक हज़ार वरस पीछे लिखेगये इस अर्से में ज़रूर बोली बदली होगी सिवाय इसके जैनियों के १४ पूर्व नाश होगये ॥

जैनियों के शास्त्र से साबित है कि महावीर बिम्बिसार और अजातशत्रु के समय में थे सूत्रों में जैन साधुओं को निर्ग्रंथ और साध्विओं को निर्ग्रंथी लिखा है वराहमिहिर और हेमचंद्र उनको निर्ग्रंथ लिखते हैं शंकर और आनंदगिरि इत्यादि और २ लिखनेवाले उसके बदल उनको विबसन और मुक्तांबर के नाम से लिखते हैं अशोक के शिलास्तंभों पर बौद्ध श्रमणों से जुदा साधुओं को निगंठ कहा है कि जिसको डाक्टर बुहलर जैनियों का निर्ग्रंथ समझता है बौद्धों के पीटकों में अक्सर निगंठों को बुद्ध और बौद्धों का वादी लिखा है निदान इन वातों से साबित होताहै कि जैनी और बौद्ध बराबर के मत वाले थे और आरंभही से इस बराबरी का प्रमाण

उनके कई पुराने इतिहासों से हाथ लगता है जैसे बौद्ध लोग साफ़ कहते हैं कि अजातशत्रु ने अपने बापको मारडाला और वह बौद्ध होनेसे पहले बहुत बद और ख़राब था जैनी लोग कूणिक अर्थात् उसी अजातशत्रु को जानी बूझी पितृहत्या के दाग़ से बचाने की कोशिश करते हैं क्योंकि निरयावलि सूत्र के अनुसार कूणिक ने अपने बापको अपने लिये अन्याई समझ के क़ैद कर दिया था परंतु जब अपनी मा से सुना कि उसका बाप तो उसे सदा प्यार करता रहा है और कोई बात ऐसी नहीं की कि जिस से क़ैद के योग्य हो कूणिक अपनी माकी बात मान के एक कुठार लेके अपने बाप की बेड़ियां काटने को चला उसके बाप श्रेणिक अर्थात् बिम्बिसार ने यह समझके कि कुठार से मुझे मारने को आता है उसे इस पाप से बचाने के लिये अपने तईं आप मारडाला अर्थात् आत्मघात किया कूणिक बहुत पछताया और बाप को मरा देख के बड़ा दुखी हुआ इस से मालूम होता है कि अजातशत्रु ने बौद्धों को मदद देने से पहले जैनियों पर कृपादृष्टि की थी॥

मथुरा में कंकली टीले से जेनरल कनिंघम ने एक नंगी खड़ी मूरत निकाली है उस पर खुदा हुआ है "नमो अर्हत महावीर देवनास" इस से ज़ाहेर है कि यहां महावीर से मुराद वर्द्धमान है बुद्ध नहीं

और उस मूरत पर संवत्सर ९८ खुदा है और उसी जगह से निकले हुए दूसरे पत्थरों पर हविश्क और कनिश्क के नाम रहने से साबित है कि वह विक्रमही का संवत्सर है सिवाय इसके बौद्धों के शास्त्रों में जैन मत स्थापन करनेवाले अथवा उसे दुरुस्त करनेवाले का चरचा है कुछ जैनियों के नाम से नहीं किन्तु निगंठनाथ या निगंठनात पुत्त के नाम से निगंठ तो जैनी साधुओं का नाम मालूम ही है नातपुत्त हम नायपुत्त जो कल्पसूत्र और उत्तराध्ययन सूत्र में महावीर का विरुद लिखा है समझते हैं नयपाल के बौद्ध पुस्तकों में निगंठनाथ को ज्ञाति का पुत्र लिखा है और जैन लोग महावीर को ज्ञात पुत्र कहते हैं हेमचन्द्र के परिशिष्ट पर्व का यह श्लोक है "कल्याणपादपरमं श्रुतगङ्गाहिमाचलम् । विश्वांभोजरविं देवं वन्दे श्रीज्ञातनन्दनम् ॥ ,, महावीर को ज्ञातनन्दन इसवास्ते कहा कि कल्पसूत्र में उनके बाप को ज्ञात क्षत्रिय लिखा है सामन्नफल सूत्र में निगंठनाथ पुत्र को अग्नि वैश्यायन लिखा है यह बौद्धों की भूल मालूम होती है उन्होंने शायद महावीर को उस के मुख्य शिष्य सुधर्मा से मिलाकर एक कर दिया क्योंकि सुधर्मा अग्नि वैश्यायन था अफ़सोस सामन्नफल सूत्र में जहां निगंठनात पुत्त का मत वर्णन किया है शाका और संवत् नहीं लिखा

तो भी उस में कोई बात ऐसी नहीं है कि जिस से निगंठनात पुत्त और महावीर दोनों एक न होसकें आत्मावतार और वैश्यन्तर इत्यादि बौद्ध पुस्तकों में लिखाहै कि अपने पहले शिष्य उपालि से कि जो बौद्ध होगया था लड़कर निगंठनात पावा में मरे कल्पसूत्र महावीर का निर्वाण पावा में बतलाता है और जैन जती निगंठ कहलाते थे पस इसमें कुछ संदेह नहीं कि निगंठनाथसे मतलब महावीरहीसे है ॥

सिवाय इसके इस बात का कि बुद्ध और महावीर दोनों जुदा जुदा थे पर एकही समय में जैनकी तारीख़ों से पक्का पता लग जाता है बुद्ध का निर्वाण सन् ईसवी से ४७७ बरस पहले हुआ और महावीर का निर्वाणस्वेताम्बरी जैनियों के कहने बमूजिब विक्रमके संवत्से ४७० बरस पहले और दिगम्बारियों के बमूजिब ६०५ बरस पहले हुआ यह १३५ बरस का फ़र्क़ जो दोनों आमनायवालों के बीच में पड़ा है विक्रमके संवत् और शालिवाहनके शाके का है विक्रम के संवत् से ४७० बरस पहले निर्वाण हुआ यह स्वेताम्बारियों की बहुत पुस्तकों में लिखा है सब से पुराना प्रमाण वह है जो मेरुतुंगके विचार श्रेणी की जड़ है और निर्वाण का संवत् राजाओं के काल से निर्णय किया है ॥

"जंरयणिं काल गओ अरिहा तित्थं करो महावी-

रो तं रयणिं अवंति वई अहिसितो पालगोराया॥ १ ॥
सट्ठी पालग रण्णोपणवरण सयं तु होइनं दाण
अट्ठसयं मुरियाणं तीसं चिअ पूसमित्तस्स ॥ २ ॥
बलमित्त भानुमित्ता सट्ठीवरिसाणि चत्तनहवहणे
तहगद्दभिल्लारज्जं तेरसवरिसा सगस्सचौ ॥ ३ ॥,,

अर्थात् पालक अवन्ती के राजा का उस रात को राज्याभिषेक हुआ कि जिस रात को अर्हत तीर्थंकर महावीर का निर्वाण हुआ ॥ १ ॥ साठ बरस राजा पालक के लेकिन १५५ बरस नन्दों के १०८ मौर्यों के और ३० पूसमित्त अर्थात् पुष्पमित्र के ॥ २ ॥ ६० बरस बलमित्र और भानुमित्र ने राज किया ४० नभोवाहन ने १३ बरस इसी तरह गर्दभिल्ल का राज रहा और शाका ४ है ॥ ३ ॥ यह श्लोक बहुत पोथियों में लिखे हैं और पुराने जैनियों ने इसी के अनुसार महावीर और विक्रम के संवत् ठहराये हैं पर इन की असल नहीं मालूम होती ४ शाके का १३ गर्दभिल्ल का ४० नभोवाहन का ६० बलमित्र और भानुमित्र का ३० पुष्पमित्र का और १०८ मौर्यों का जोड़ने से २५५ होता है और उस में विक्रम के संवत् का ५७ बरस मिलाने से चन्द्रगुप्त का अभिषेक ३१२ बरस सन् ईसवी से पहले ठहरता है और यूनानियों के संवत् से इस संवत् के पास पास मिलजाने से साबित होता है कि विक्रम

जो तीसरे श्लोक में लिखा है वही विक्रम है जिसने सन् ईसवी से ५७ बरस पहले संवत् चलाया और सन् ईसवी ७८ का शाका चलानेवाला शालिवाहन ही है ६० बरस पालक के राज के और १०५ नवनन्दों के अर्थात् २१५ बरस चंद्रगुप्त के अभिषेक में अर्थात् सन् ईसवी से पहले ३१२ में मिलाने से महावीर का निर्वाण सन् ईसवी से ५२७ बरस पहले ठहरता है सिंहल अर्थात् लंकावाले बुद्ध का निर्वाण सन् ईसवी से ५४३ बरस पहले मानते हैं पस कुल १६ बरस का फ़र्क रह जाता है ॥

हेमचन्द्र अपने परिशिष्टापर्व में लिखता है "एवं च श्रीमहावीरे मुक्ते वर्ष शते गते। पंच पंचाशदधिके चंद्रगुप्तो भवन्नृपः ॥१॥" इससे यह बात निकलती है कि महावीर के निर्वाण से १५५ बरस पीछे चंद्रगुप्त का अभिषेक हुआ हेमचंद्र पालक के राज का ६० बरस नहीं लेता इस कारन महावीर का निर्वाण हेमचंद्र के अनुसार ४६७ बरस सन् ईसवी से पहले पड़ता है और सिंहलवालों की भूल जो अब सही की गई है उस के अनुसार बुद्ध का निर्वाण भी ४७७ बरस सन् ईसवी से पहले पड़ता है कि जिस से कुल १० बरस का फ़र्क रह जाता है और यही शुद्धतर मालूम होता है ॥ इति

—०—